Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

नैतिकता, सत्यनिष्ठा व अभिवृत्ति

(भाग-1)

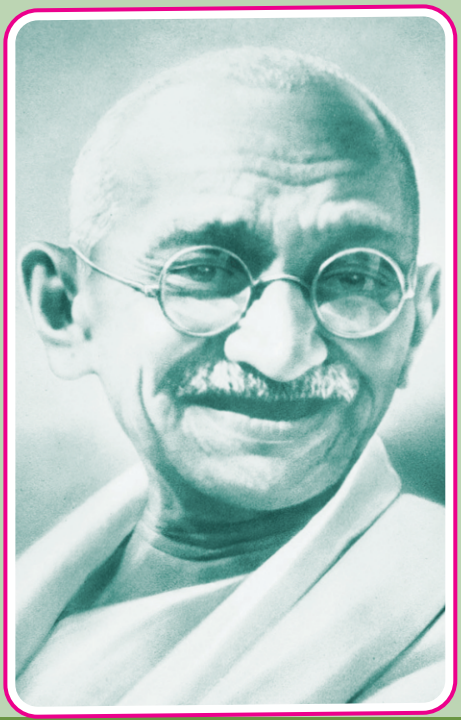

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: MPM04

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

नैतिकता, सत्यनिष्ठा व अभिवृत्ति

(भाग–1)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP विषय सूची (Contents)

1.	**नीतिशास्त्र : एक परिचय**	**5–12**
1.1	नीतिशास्त्र	5
1.2	मानव मूल्य	9
2.	**मानवीय आवश्यकताएँ एवं अभिप्रेरणा**	**13–40**
2.1	लोक प्रशासन में नैतिक सद्गुण एवं मूल्य	13
2.2	प्रशासन में नैतिक तत्त्व	16
2.3	नैतिक तर्क एवं नैतिक दुविधा	20
2.4	नैतिक मार्गदर्शन के रूप में अंतरात्मा	24
2.5	लोक सेवकों हेतु आचरण संहिता	27
2.6	शासन में उच्च मूल्यों का पालन	31
2.7	अभिप्रेरणा	33
3.	**दार्शनिक/विचारक, सामाजिक कार्यकर्त्ता/सुधारक**	**41–105**
3.1	महावीर स्वामी	41
3.2	गौतम बुद्ध	46
3.3	कौटिल्य	50
3.4	प्लेटो	53
3.5	अरस्तु	56
3.6	गुरु नानक	59
3.7	कबीर	60
3.8	तुलसीदास	62
3.9	रवींद्रनाथ टैगोर	65
3.10	राजा राममोहन राय	67

3.11 स्वामी दयानंद सरस्वती 70

3.12 स्वामी विवेकानंद 73

3.13 श्री अरविंदो 76

3.14 महात्मा गांधी 79

3.15 डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन 87

3.16 डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर 90

3.17 मौलाना अबुल कलाम आज़ाद 96

3.18 पंडित दीनदयाल उपाध्याय 98

3.19 राम मनोहर लोहिया 100

4. मनोवृत्ति **106–128**

4.1 मनोवृत्ति क्या है? 106

4.2 मनोवृत्ति का निर्माण 109

4.3 मनोवृत्ति के प्रकार्य 112

4.4 मनोवृत्ति परिवर्तन 115

4.5 प्रबोधक संप्रेषण 118

4.6 पूर्वाग्रह एवं विभेद 121

4.7 भारतीय संदर्भ में रूढ़िवादिता 126

अध्याय
1

नीतिशास्त्र : एक परिचय
(Ethics: An Introduction)

नैतिकता अनिवार्य रूप से एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका उद्देश्य समाज का हित होता है। नैतिकता की यह मांग है कि व्यक्ति अपने निजी हित के स्थान पर समाज के कल्याण को अधिक महत्त्व दे परंतु यह एक ऐच्छिक कार्यविधि है जिसकी अपेक्षा तो समाज करता है परंतु क्रियान्वयन व्यक्ति विशेष के स्वविवेक पर निर्भर होता है। दार्शनिकों के अनुसार नीतिशास्त्र 'आचरण का विज्ञान' है। ऐसे मूल्य, जो हमारा मार्गदर्शन करते हैं कि कैसे हमें व्यवहार करना चाहिये, 'नैतिक मूल्यों' की श्रेणी में आते हैं, जैसे– ईमानदारी, निष्पक्षता आदि। इसलिये एक विश्वसनीय काम के माहौल को बढ़ावा देने के लिये नीतिशास्त्र का प्रशिक्षण अत्यधिक आवश्यक है। नैतिकता सदैव समाज सापेक्ष होती हैं। समाज में तो नैतिक मूल्यों का निर्माण होता है और समाज के लोगों की अंतर्क्रिया के फलस्वरूप ही इसका विकास होता है। समय के साथ-साथ समाज की व्यवस्थाओं में परिवर्तन आने पर प्रायः नैतिक प्रगति या अवनति देखी गई है। इसलिये नीतिशास्त्र का महत्त्व एवं प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी।

1.1 नीतिशास्त्र *(Ethics)*

- नीतिशास्त्र एक मानवीय, सामाजिक, सैद्धांतिक व व्यवहारपरक विज्ञान है, जिसके अंतर्गत समाज में रहने वाले सामान्य मनुष्यों के आचरण का मूल्यांकन अथवा अध्ययन किया जाता है।
- नीतिशास्त्र का अध्ययन 'विषय विशेष के रूप में' तथा समाज में नैतिक व्यवस्था के रूप में किया जाता है।

एथिक्स और मोरैलिटी

- नैतिकता के लिये अंग्रेज़ी में दो शब्द प्रचलित हैं– 'एथिक्स' और 'मोरैलिटी'।
- एथिक्स एक ग्रीक शब्द 'एथिकोस' (Ethicos) से बना है, जिसकी उत्पत्ति 'इथोस' (Ethos) से हुई है। इथोस का उस समय अर्थ था रीति-रिवाज़, हालाँकि आजकल इसका अर्थ 'आंतरिक विशेषता' के संदर्भ में लिया जाता है।
- इसी प्रकार मोरैलिटी शब्द का निर्माण लैटिन भाषा के शब्द 'मूर्स' (mores) से हुआ है, जिसका अर्थ है– रीति-रिवाज़।
- इन दोनों में कोई तात्त्विक अंतर नहीं है। सामान्य जीवन में प्रायः मोरैलिटी शब्द का प्रयोग किया जाता है जबकि अध्ययन के क्षेत्र में एथिक्स का।

विषय विशेष के रूप में नीतिशास्त्र *(Ethics as a special subject)*

विषय विशेष के रूप में पढ़ते समय नीतिशास्त्र को एक विज्ञान के तौर पर देखा जाता है जिसके अंतर्गत उसका व्यवस्थित अवलोकन, उसकी विषय-वस्तु और कुछ मूलभूत सिद्धांतों या नियमों की खोज की जाती है। उदाहरण के तौर पर–उपरोक्त प्रथम बिंदु में नीतिशास्त्र को एक मानवीय, सामाजिक, सैद्धांतिक व व्यवहारपरक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया है तथा समाज में रहने वाले मनुष्य, उनका आचरण तथा उस आचरण का अध्ययन ही इस विज्ञान की विषय-वस्तु है। विषय-वस्तु के चारों बिंदु निम्नलिखित हैं–

- **समाज में रहने वाले** से तात्पर्य समाज-सापेक्ष धारणा से है अर्थात् 'एथिक्स' अकेले व्यक्ति पर लागू नहीं होता, यहाँ समग्र समाज का अध्ययन किया जाता है।
- **सामान्य मनुष्य** के अंतर्गत पशु-पक्षियों, सात वर्ष तक के बच्चों, मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगों के साथ ऐसे लोगों की गणना नहीं की जाएगी जो किसी विशेष अवस्था (जैसे– नशे या अर्द्धबेहोशी) में हों। सामान्य शब्दों में इन सभी के अतिरिक्त जो भी लोग हैं, वे सामान्य मनुष्य हैं जिन पर 'एथिक्स' की बात लागू होती है।
- **आचरण** मानवीय क्रियाकलाप का एक प्रकार है जिसे 'नैतिक कर्म' भी कहा जाता है। मानवीय क्रियाकलाप का दूसरा प्रकार 'नीतिशून्य कर्म' है। व्यक्ति नैतिक या अनैतिक केवल उन कर्मों के संदर्भ में माना जाता है जिनका निर्णय करने

- विभिन्न पाठ्यक्रमों द्वारा स्वतंत्रता, समानता, अहिंसा, नैतिक शिक्षा का प्रभाव पड़ना। उदाहरण के लिये– इतिहास के पाठ्यक्रम यदि गांधीजी का अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना या सत्य, अहिंसा का पाठ प्राथमिक और उच्च शिक्षण संस्थान में पढ़ाया जाए तो इसका प्रभाव मूल्य विकास में निश्चित तौर पर सहायक होगा।
- इसी प्रकार अध्यापक और छात्र समूह का भी मूल्यों के विकास में अहम योगदान होता है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- अंत:प्रज्ञावाद का अर्थ है कि कुछ निश्चित नैतिक नियम हैं, जो व्यक्ति को अपनी अंतरात्मा से पता चलते हैं, इसलिये मनुष्य को उसी के अनुसार कर्म करना चाहिये।
- स्वार्थवादी विचारधारा के समर्थक सिरिनाइक संप्रदाय के विचारक एरिस्टिपस, एपीकुरस आदि थे।
- स्वार्थवाद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपनी मूल प्रकृति में स्वार्थी होता है और उसे प्रत्येक निर्णय इसी आधार पर करना चाहिये कि उसका अधिकतम स्वार्थ किसमें है?
- सुखवाद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति सुखाकांक्षी होता है इसलिये उसे वही विकल्प चाहिये जिससे उसे अधिकतम सुख की प्राप्ति हो।
- उपयोगितावाद अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख की बात करता है।
- दर्शनशास्त्र के तीन प्रमुख अंग माने जाते हैं– ज्ञानमीमांसा, तत्त्वमीमांसा तथा नीतिशास्त्र।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिये)

(a) नीतिशास्त्र को परिभाषित कीजिये।
(b) मानकीय नीतिशास्त्र से आप क्या समझते हैं?
(c) पर्यावरण नैतिकता को परिभाषित कीजिये।
(d) लैंगिक नीतिशास्त्र से आप क्या समझते हैं?
(e) आधुनिक विचारधाराओं के आधार पर नीतिशास्त्र के प्रकार बताइये।
(f) मानव मूल्य क्या है?

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये)

1. शाखाओं के आधार पर नीतिशास्त्र को समझाइये।
2. पर्यावरण नैतिकता पर टिप्पणी कीजिये।
3. नैतिक व्यवस्था के रूप में नीतिशास्त्र किस प्रकार सहायक है?
4. नैतिक मूल्यों का निर्धारण कैसे होता है? समझाइये।
5. मानव मूल्य क्या है? विशेषताएँ एवं मूल्यों के प्रकार को समझाइये।
6. मूल्यों के विकास में परिवार, समाज एवं शिक्षण संस्थानों की क्या भूमिका है? टिप्पणी कीजिये।

अध्याय
2

मानवीय आवश्यकताएँ एवं अभिप्रेरणा (Human Necessity and Motivation)

लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिये अभिप्रेरित प्रशासन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अभिप्रेरणा के द्वारा मानव व्यवहार को संगठन के लक्ष्य की दिशा में कार्य करने के लिये आंतरिक तथा बाह्य रूप से प्रेरित किया जा सकता है। लोक कल्याणकारी राज्य में सिविल सेवकों के बढ़ते उत्तरदायित्व एवं जवाबदेहिता के कारण लोक सेवकों के लिये यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि वह नैतिक मूल्यों एवं प्रशासनिक मूल्यों में टकराव न होने दें एवं अपने व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं कर्त्तव्यों के बीच नैतिक दुविधा जैसी परिस्थिति उत्पन्न न होने दें। भारतीय प्रशासन एक वृहद् संगठन है जो संवैधानिक और संविधानेतर कतिपय मूल्यों को आधारभूत मूल्यों के रूप में स्वीकार करता है। अब्राहम मैस्लो ने मानवीय आवश्यकताओं के संबंध में आवश्यकता सोपान सिद्धांत के माध्यम से संगठन में कार्य करने वाले कार्मिकों को उनकी ज़रूरतों के अनुसार वर्गीकृत किया है जिनमें अभिप्रेरणा महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। लोक प्रशासन में नैतिक मूल्यों और अभिप्रेरणा की आवश्यकता सदैव बनी रहती है।

2.1 लोक प्रशासन में नैतिक सद्‌गुण एवं मूल्य *(Ethics and Values in Public Administration)*

लोक प्रशासन का तात्पर्य लोक कल्याण की दृष्टि से सार्वजनिक या लोक सेवाओं का प्रबंधन करना है। लोक कल्याण का कार्य प्रशासकों द्वारा किया जाता है। राज्य की प्रकृति में बदलाव के साथ ही लोक प्रशासन के कार्य की प्रकृति व क्षेत्र में भी परिवर्तन आए हैं। साथ ही प्रशासकीय अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होने लगी है। इन अधिकारों पर कानून एवं नैतिक मार्गदर्शन की कमी के कारण प्रशासकों के कार्यों में जटिलताएँ बढ़ने लगी हैं। इसके परिणामस्वरूप नियमों के प्रति विमुखता, अकार्यकुशलता, ईमानदारी व सत्यनिष्ठा की कमी देखने को मिली है। यही कारण है कि लोक प्रशासन में नीतिशास्त्र एवं मूल्यों की उपयोगिता व आवश्यकताओं पर विचार किया जाने लगा है।

राज्य की प्रकृति में परिवर्तन से लोक प्रशासन से अपेक्षाएँ *Expectations from public administration by the change in the state's nature)*

- राज्य के निर्माण से ही उसकी प्रकृति में परिवर्तन होता रहा है। जैसे-जैसे राज्य की प्रकृति और गतिविधियों का विस्तार होता गया है वैसे-वैसे लोक प्रशासन का महत्त्व बढ़ता गया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हम प्रशासन की गोद में पैदा होते हैं, पलते हैं, बड़े होते हैं, मित्रता करते हैं एवं टकराते हैं और मर जाते हैं।
- वर्तमान समय में राज्य के प्रकार्यों में वृद्धि ने सरकार की भूमिकाओं में व्यापक परिवर्तन किया है जिसके अंतर्गत सरकार विधि-व्यवस्था, आंतरिक सुरक्षा, बाहरी आक्रमण से सुरक्षा के कार्यों के साथ जनता की विभिन्न आकांक्षाएँ भी पूर्ण करती हैं।
- सरकार जैसे– जैसे अपने विकास के साथ नवीन कार्यों व दायित्व को सँभालती है, प्रशासन को भी उसी अनुरूप प्रभावी प्रक्रियाएँ करनी होती हैं। यह वास्तव में लोक सेवा के समुचित एवं विवेकी संगठन से ही संभव है क्योंकि सक्षम व प्रभावी लोक सेवा के अभाव में प्रशासन पूर्णतः विघटित हो जाएगा।
- स्पष्ट है कि यह आवश्यकता लोक कार्मिकों में निष्ठा, प्रतिभा, कर्मनिष्ठा, सामर्थ्य, कार्य के प्रति समर्पण भावना आदि की मांग करती है जिन्हें लोक प्रशासन में सदाचार एवं नैतिक मूल्यों के रूप में देखा जा सकता है।

लोक प्रशासन में नैतिक सद्‌गुणों एवं मूल्यों की आवश्यकता

लोक प्रशासन में नैतिक सद्‌गुणों एवं मूल्यों की आवश्यकता के निम्नलिखित कारण हैं-

- राजनीतिक नेतृत्व में गिरावट
- भ्रष्टाचार
- भाई-भतीजावाद
- समाज में व्याप्त असमानता
- वैश्विक मानकों के अनुपालन की आवश्यकता

अध्याय
3

दार्शनिक/विचारक, सामाजिक कार्यकर्त्ता/सुधारक (Philosopher/Thinker, Social Worker/ Reformer)

संसार के महान नेताओं, प्रशासकों और सुधारकों ने अपने जीवन एवं उपदेशों से संसार एवं मानवता को नई राह दिखाई है। समय साक्षी है कि उनकी वाणियों की प्रासंगिकता और महत्ता अक्षुण्ण रही है। उनके कर्म और विचार मानव सभ्यता को और अधिक ऊँचाई की ओर ले जाने में सक्षम साबित हुए हैं। इन नेताओं, सुधारकों एवं प्रशासकों के प्रयास किसी धर्म, जाति, वर्ण, प्रजाति आदि के लिये नहीं होकर मानव मात्र के कल्याण के लिये समर्पित थे; इसलिये उन्हें सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। इन महान लोगों के जीवन के सिद्धांतों को हम उनके व्यवहार में भी देख सकते हैं। इनके सिद्धांतों और आचरण में भेद नहीं बताया जा सकता। ये जिस तरह के जीवन की आशा अपने अनुयायियों से करते थे, वैसा जीवन खुद भी जीते थे। इनके चरित्र और आचरण में भिन्नता नहीं मिलती है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण दार्शनिकों, नेताओं, सुधारकों एवं प्रशासकों का परिचय नीचे दिया गया है।

3.1 महावीर स्वामी *(Mahavir Swami)*

प्रारंभिक जीवन *(Initial life)*

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म 540 ई.पू. में वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था। इनके पिता सिद्धार्थ ज्ञातृक कबीले के मुखिया थे जो लिच्छवी गणराज्य में एक प्रमुख कबीला था। माता त्रिशला वैशाली के राजा चेटक की बहन थी।

जन्म	–	540 ई.पू. (अन्य स्रोत-599)
जन्मस्थान	–	कुंडग्राम (वैशाली) (बिहार)
जन्म नाम	–	वर्द्धमान
पिता	–	सिद्धार्थ
माता	–	त्रिशला
पत्नी	–	यशोदा
पुत्री	–	प्रियदर्शना/प्रियदर्शनी
कुल	–	ज्ञातृक
निर्वाण	–	पावापुरी (बिहार के राजगीर के निकट)
मृत्यु	–	468 ई.पू. (अन्य स्रोत 527 ई.पू.)

वर्द्धमान महावीर स्वामी ने 30वर्ष की आयु में माता-पिता की मृत्यु के बाद अपने बड़े भाई नंदिवर्धन की आज्ञा से सांसारिक जीवन का परित्याग कर संन्यास ग्रहण कर लिया और सत्य की खोज में घर से निकल गए। अपनी तपस्या के 12वें वर्ष में ऋजुपालिका नदी के तट पर शृंभिक ग्राम में साल वृक्ष के नीचे वैशाख शुक्ल की दशमी को उन्हें कैवल्य (ज्ञान) की प्राप्ति हुई और वे केवलिन कहलाए।

- इसी समय से महावीर जिन (विजेता), अर्हत् (पूज्य) और निर्ग्रंथ (बंधनहीन) कहलाए।
- कोसल, मिथिला, चंपा, मगध आदि महाजनपदों में महावीर ने 30 वर्षों तक जैन धर्म का प्रचार किया।
- 72 वर्ष की आयु में महावीर की मृत्यु (निर्वाण) 468 ई.पू. में पावापुरी (बिहार के राजगीर के निकट) में हुई।
- अपनी समस्त इंद्रियों को वश में करने के कारण उन्हें 'जिन' (विजेता) कहा गया। इसी से जैन शब्द की उत्पत्ति हुई।
- महावीर को अव्यवस्थित जनविश्वासों को व्यवस्थित तथा सुदृढ़ धर्म में संहिताबद्ध करने का श्रेय प्राप्त है।

महावीर के उपदेश: जैन दर्शन आत्मा, आत्मा की अमरता, बंधन, मोक्ष, पुनर्जन्म और कर्म सिद्धांत को मानता है परंतु सैद्धांतिक रूप से ईश्वर व अवतारवाद में यकीन नहीं रखता। व्याहारिक तौर पर जैन धर्म में ईश्वर को स्वीकार कर लिया गया है। परंतु उसका स्थान 'जिन' से नीचे रखा गया है। महावीर ने ज्ञान प्राप्ति के बाद पहला उपदेश राजगृह के वितलपणी पहाड़ी पर दिया था। महावीर स्वामी ने सर्वाधिक उपदेश वैशाली में दिये।

अध्याय
4

मनोवृत्ति (Attitude)

व्यक्ति की मनोवृत्ति उसका व्यक्तित्व निर्माण करने के साथ-साथ समाज में उसके कार्य-व्यवहार को संचालित करती है। मनोवृत्ति समाज से प्रभावित होती है और उसे प्रभावित भी करती है। सामान्यत: किसी मनोवैज्ञानिक विषय के पक्ष में सकारात्मक या नकारात्मक भाव की तीव्रता को मनोवृत्ति कहते हैं। आमतौर पर मनोवृत्तियाँ व्यक्तिगत अनुभव एवं समाज के साथ अंतर्क्रिया द्वारा सीखी जाती है। चूँकि मनोवृत्ति सापेक्षत: स्थायी होती है तथा इसमें प्रेरित करने की शक्ति भी होती है इसी विशेषता के कारण मनोवृत्ति का महत्त्व सिविल सेवकों के लिये बहुत अधिक हो जाता है। सिविल सेवकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी मनोवृत्ति, पूर्वाग्रहों एवं रूढ़ियुक्ति से मुक्त रहते हुए अपने कार्य दायित्वों का निर्वहन करें। मनोवृत्ति के कारण हमारा दृष्टिकोण तटस्थ और वस्तुनिष्ठ नहीं रह पाता है जबकि सिविल सेवकों के लिये यह जरूरी है कि उनका दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ तथा तटस्थ हो।

4.1 मनोवृत्ति क्या है? *(What is Attitude?)*

मनोवृत्ति का सामान्य अर्थ किसी मनोवैज्ञानिक विषय (Psychological Object) (अर्थात् व्यक्ति, वस्तु, समूह, विचार, स्थिति या कुछ और जिसके बारे में भाव आ सके) के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक भाव की उपस्थिति है। उदाहरण के लिये, वर्तमान भारत में पश्चिमी संस्कृति और ज्ञान के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति है, जबकि पारंपरिक तथा रूढ़िवादी मान्यताओं के प्रति आमतौर पर नकारात्मक मनोवृत्ति दिखाई पड़ती है।

मनोवृत्ति की परिभाषा में समय के साथ परिवर्तन आया है। शुरुआती परिभाषाओं में इसके केवल एक पक्ष पर बल दिया जाता था जिसे मूल्यांकन परक पक्ष (Evaluative) या भावनात्मक (Affective) पक्ष कहा जा सकता है। 1946 में थर्सटन ने इसकी परिभाषा देते हुए कहा कि किसी मनोवैज्ञानिक विषय के पक्ष या विपक्ष में सकारात्मक या नकारात्मक भाव की तीव्रता को मनोवृत्ति कहते हैं।

कालांतर में कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस बात पर बल दिया कि मनोवृत्ति में सिर्फ भावनात्मक पक्ष नहीं होता बल्कि संज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive aspect) भी होता है अर्थात् एक जानकारी या विश्वास की उपस्थिति भी होती है। उदाहरण के लिये अगर कोई पुरुष कहता है कि महिलाएँ अतार्किक होती हैं तो इसमें महिलाओं में तर्क बुद्धि कम होने का विश्वास अंतर्निहित है और साथ ही उनके प्रति नकारात्मक भावना भी शामिल है। 1980-90 के बाद मनोवृत्ति की परिभाषा और व्यापक हो गई। इन परिभाषाओं में निहित दृष्टिकोण को ABC दृष्टिकोण कहा जाता है। यहाँ A का अर्थ Affective या भावनात्मक है; B का अर्थ Behavioural अर्थात् व्यवहारात्मक जबकि C का अर्थ Cognitive या संज्ञानात्मक है। इसे हिन्दी में 'संभाव्य' (संज्ञानात्मक, भावात्मक, व्यवहारात्मक) कहते हैं। इस दृष्टिकोण के समर्थक मानते हैं कि मनोवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक विषय के प्रति इन तीन संघटकों की अपेक्षाकृत स्थायी मानसिकता है। उदाहरण के लिये- यदि कोई श्वेत-अश्वेतों के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति रखता है तो उसमें तीन पक्ष होंगे:

(i) उसके पास कुछ ऐसी जानकारियाँ होंगी जिनसे साबित होता हो कि अश्वेत बुरे होते हैं, ये जानकारियाँ गलत हो सकती हैं किंतु उसे विश्वास होगा कि ये सही हैं (संज्ञानात्मक पक्ष)।

(ii) वह अश्वेतों के प्रति नफरत या घृणा जैसी भावनाएँ अनुभव करेगा (भावनात्मक पक्ष)।

(iii) वह किसी अश्वेत को देखकर नकारात्मक प्रतिक्रिया करेगा, जैसे– उससे दूर बैठना, हाथ न मिलाना या गालियाँ देना आदि (व्यवहारात्मक पक्ष)।

सामान्यत: माना जाता है कि मनोवृत्ति इन तीनों पक्षों से मिलकर बनती है। हालाँकि, समकालीन अनुसंधानों के अनुसार मनोवृत्ति में व्यवहारात्मक पक्ष का उपस्थित होना अनिवार्य नहीं है। कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या समूह के बारे में गलत धारणाएँ रखता हो (संज्ञानात्मक), बुरी भावनाएँ भी रखता हो (भावनात्मक) किंतु नैतिक मूल्यों या सामाजिक दबावों अथवा लड़ाई-झगड़े के भय से अपनी मनोवृत्ति के अनुरूप आचरण न करे। जैसे– अफ्रीका में घूमते समय कोई श्वेत व्यक्ति अश्वेतों के प्रति वैसा आचरण नहीं करेगा जैसा अपने देश में कर सकता है।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456